ORIGINAL RESEARCH PAPER

Sanskrit

श्रीमद् भागवतमहापुराण एवं आनन्द कन्द चम्पू में प्रयुक्त श्रृंगार रस का तुलनात्मक विवेचन

KEY WORDS:

संगीता कुमारी

शोध छात्रा संस्कृत विभाग, ति० मॉ० भा० वि०, भागलपुर

ABSTRACT

काव्याचार्यों के द्वारा स्वीकृत रसों में श्रृंगार रस का अपना एक अलग ही महत्त्व है इस रस के प्रयोग के बिना कोई भी काव्य चित्ताकर्षक नहीं हो सकता। काव्य शास्त्र के सभी आचार्यों ने श्रृंगार रस के दो भेद स्वीकार किये हैं। आचार्य मम्मट ने "श्रृंगारस्य द्वौ भेदौ, सम्भोगो विश्वनाथ विप्रलम्भश्च" कह कर दो भेदों का ही प्रतिपादन किया। आचार्य विश्वनाथ इसी मत को स्वीकार करते हैं। किन्तु धनञ्जय ने "आयोग विप्रयोगाय सम्भोगचेति से त्रिधा" कहकर श्रृंगार रस के तीन भेद माने हैं–

1. अयोग
2. विप्रयोग
3. सम्भोग।

यहां हमारा उप्रेश्य श्रृंगार रस के उपांगों को विस्तारित वर्णन करना नहीं है। इसलिए इस प्रसंग को यहीं समाप्त करते हैं और श्रृंगार रस की दृष्टि से विवेच्य काव्यों का अनुशीलन करेंगे।

श्रीमद् भागवत के दशम स्कन्ध में श्रृंगार रस

महर्षि वेदव्यास साक्षात ऋषि थे जो नाना भावों, तर्कों, उग्रीपन कारणों के कान्तदर्शी थे। यही कारण है कि जो चित्र, प्रकृति और सौम्य भावना को सुन्दर रूप में दर्शाया है, वह देखते ही बनता है। नायक के रूप में भावों और अनुभावों के आदि श्रोत उद्गम के रूप में साक्षात श्रीकृष्ण जी है। इसलिए श्रृंगार के नाना रूप कूप मणि के समान उज्जवल उजागर करते हैं। श्रीकृष्ण जैसा केलि पटू नायक जहां भवन भी सरस, सुरभित होकर चाटुकारी कर रहा है। वन, दिगन्त, बेनान्त सभी बसन्त प्रधान बनकर माधुर्य प्रदान करते है, वहां श्रृंगार की भी अनुपम छटा दृष्टिगोचर है।

महर्षि वेदव्यास की रचना श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में श्रृंगार के तीनों पक्ष दिखायी पड़ते हैं–

अयोग–

अयोग के चित्रण में वेदव्यास जी ने रूक्मिणी का चित्रण अति सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया है। रूक्मिणी श्री कृष्ण के रूप–बल–वर्ण को श्रवण करके कर्ण को तृप्त और प्रसन्न करती है। वह श्रीकृष्ण के ही रूप–सागर कल्पनाओं में डूबती–उभरती रहती है पर भाई रूक्मी उसे शिशुपाल को सौंप देना चाहता है। रूक्मिणी अधीर सी श्रीकृष्ण पीर को धारण करती है। वेदना को कह नहीं पाती। अन्त में गुप्त रूप से अपने शीतल हृदय को श्रीकृष्ण के शीतल स्मरण से शान्त करती है और पूज्य ब्राह्मण को उनके पास भेजती है–

श्रृत्वा गुणान् भुवनसुन्दर श्रृण्वतां ते
निर्विश्च कर्णविवरैर्हरतोऽङ्तापम्
रूपं दृशां दृशिमतामखिलार्थलाभं
त्वय्यच्युताविशति चित्तमपत्रप मैं

10 / 52 / 37

विप्रयोग–

भगवान के सहसा अन्तर्धान हो जाने पर हास–विलास में गोपियों की दशा अकथनीय दुःख विलोड़ित हो रही है। बाहर–भीतर खोए हुए श्रीकृष्ण को नयनों से न देख पाने के कारण सारी गोपियां विकल हो उठीं। उनका हृदय पुष्ट शरीर, मस्त गजेन्द्र सी चाल, प्रेमभरी चितवन, हंसते हुए प्रेम–आलाप, श्रृंगार ही तरूणी के चितवन में छलकने लगा। भगवान श्रीकृष्ण के वियोग में विकल गोपियां रमापति श्रीकृष्ण की नाना प्रकार की चेष्टायें करके अपने विकल मन को सहारा देने लगीं। वे अपने आपको भूल कर श्रीकृष्ण हो गयी और श्रीकृष्णमय होकर उनके लीला–विलास का अनुसरण कर ऊँचे स्वर में विलाप करने लगीं। एक वन से दूसरे वन में जा–जाकर श्रीकृष्ण का अनुसन्धान करने लगीं। उनको ये पता न था कि श्रीकृष्ण उनसे दूर नहीं है। सभी जड पदार्थों में आकाश के समान एकरस अवस्थित हैं।

गायन्त्य उच्चैरमुमेव संहता
विचिक्युरून्मत्तकवद् वनाद् वनम्।
पप्रच्छुराकाशवदन्तरं बहि
र्भूतेषु सन्तं पुरूषं वनस्पतीन्

10 / 30 / 4

सम्भोगः–

श्रीकृष्ण के कमल–हस्त से कल्हार की सुगन्ध छूट रही है, उस पर भी चंदन का लेप झेंप रहा है, मदभरे श्रीकृष्ण ने गोपी के कंधे पर हाथ रखा, सुगन्ध विकल और पुलकित गोपी सिहर उठी, उसके नेत्र सहस् नेत्र हो गये और वह मुग्धा मोहित हो गयी–

तत्रैकांसगतं बाहुं कृष्णस्योत्पलसौरभम्।
चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमा चुचुम्ब ह

10 / 33 / 12

श्रीकृष्ण श्रृंगार के रसेश्वर आचार्य हैं तो वेदव्यास भी एक सिद्ध कवि हैं, उनके द्वारा उद्वेलित वचनावली रचना में अदभुत चमत्कार और कवियों के लिए काव्य शिल्प प्रस्तुत करती है। रास–लीला का वर्णन तो संस्कृत–साहित्य में क्या, विश्व–साहित्य में अनुपम और अनुकरणीय योगदान है। यह योगज दृष्टि और समाधिभाषा का ही अन्चकन है। श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध श्रृंगार के तीनों पक्ष अयोग, विप्रयोग और सम्भोग के तीनों पक्षों का एक अद्भुत रत्नाकर है। इस में रस–लुब्ध कवि–भ्रमर भ्रान्त हो जाते है और रस–सिद्ध आचार्य भी दक्षता प्राप्त करते है।

आनंद कन्द चम्पू काव्य में श्रृंगार रस

मित्र मिश्र श्रृंगार रस के चतुर और पटु उद्गाता है। श्रृंगार के उभार के लिए रसार्द्र शब्द उनकी रचना में अपने आप आ जाते है। उनके आनन्द कन्द चम्पू में श्रृंगार के सभी पक्ष दृष्टिगत होते हैं–

अयोग–

अयोग श्रृंगार के प्रसंग में कुब्जा के लिए सौन्दर्य प्रदान करने से श्रीकृष्ण उल्लास से भर गये। कुब्जा का लावण्य और चातुर्य यह प्रमाणित करने लगा कि वह किसी अन्य लावण्य सागर से प्रकट हुई अनुपम लक्ष्मी है। वह नेत्रों के विलास से श्रीकृष्ण को आमन्त्रित करती है जिससे त्रिभुवन–मोहन भी मोहित हो जाते हैं। भगवान उसे आश्वासन देते हैं कि फिर मिलेंगे, अभी तो कंस के विध्वंस के लिए अनेक उपाय करने हैं। यह कहकर रंग–मंच की ओर चल देते हैं–

निशाविलासाय विलासनेत्रया निमन्त्रितःस्मेरदृगंचलेन सः।
चचाल भूपालधनुर्दिदृक्षया विपक्षपक्षक्षयमुख्यदीक्षया

7 / 106

विप्रयोग–

अचानक मायाधाम अन्तर्धान हो जाते हैं। चन्द्रमा की चारू चंचल किरणें जल, थल में कल–कल मचा रही है, पपीहा, पिउ–पिउ की ध्वनि में पी–कहा, पी–कहां की रट लगा रहा है, इधर गोपियां निर्व्यापार होकर निष्प्राण हो रही हैं। रात को चन्द्रागम के कारण मुरझाई हुई कमलिनी के समान उन्मादिनी गोपी कहती है नन्द–नन्दन जा रहे हैं–

जालं मनः प्रेमपयोधिमानमुद्वर्त्तुकामेन मनोभवेन।
व्यतानि लोमांचममिषान्मुरारेर्गाप्याश्च गाढं परिरम्भणेन

6 / 258

इस प्रकार श्रृंगाररस के सभी पक्षों का वर्णन मित्र मिश्र ने आनन्द कन्द चम्पू काव्य में बड़ी चारूता और भव्यता के साथ किया है। यही कारण है कि वे आनन्द कन्द चम्पू काव्य के माध्यम से गोपियों के थके हुए हृदय को विश्राम और भावार्द्र–भावनाओं को रस–सिक्त करते हैं।

तुलना–

महर्षि वेदव्यास ऐसे ऋषि हैं जिनकी वाणी के पीछे–पीछे अर्थ सिद्धि दौड़ती है। वे जब श्रृंगाररस के जिस पक्ष का जिस प्रकार स्पर्श करते हैं, वही सहर्ष उत्कर्ष में आ जाता है। दशम–स्कन्ध में श्रृंगार समस्त सवैर, सदोष ईर्ष्या कालान्तर के मध्य में विवरण करने वाला उल्लासपूर्ण चारण है। जो चर का भी काम करता है और चारण उद्मायकद्म का भी। श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध में श्रृंगार समस्त कथानक को नवनीत कोमल बना देता है। महर्षि वेदव्यास ने श्रृंगार के जिन अंगों एवं उपांगों को अपनी लेखनी से सजा संवार कर लिपिबद्ध किया है, मित्र मिश्र ने भी उन्हीं अंगों–उपागों में अपनी काव्य–प्रतिभा का रस–रंग उडेल दिया है।

कर्ण को जो शब्द स्पर्श करते है, उन शब्दों का व्यंग्यार्थ भी तरूणी के मुख पर लावण्य–कान्त के समान कुछ पृथक ही आभासित होता है। महर्षि वेदव्यास इस चातुर्य के मधुर शिल्पी है। उनके काव्य–शिल्प में अभिव्यंजना व्यापार बहुत ही सुन्दरता के साथ दमक रहा है। जिस बात को कहने में सहस्त्रों शब्दों पर्याप्त नहीं होते महर्षि वेदव्यास थोडे ही शब्दों में व्यक्त कर देते है। यही कारण है कि उनके एक ही श्लोक में संभोग विप्रयोग श्रृंगार के अनेक उपांग दृष्टिगोचर होते है।

जब कि मित्र मिश्र उन उपांगों के लिए एक–एक श्लोक का स्थान प्रदान करते हैं।

महर्षि वेदव्यास तो कवियों और आचार्यों के भी गुरूगरीयान हैं। श्रृंगार रस के क्षेत्र में उनकी वाग्धारा मन्दाकिनी की धारा सी स्वच्छ और पावन है।

मित्र मिश्र ने ऋषि वेदव्यास के कथनों का अनुवाद किया। घटनायें प्रसंग सब वही है, पर काव्यशिल्प के कारण मित्र मिश्र का काव्य बहुत निखर गया है। उनकी प्रखर–प्रतिभा अलंकृत पदावली चतुर–गामिनी पद्धति मन भाविनी सी मदभारी और हंसिनी सी मोहक है।

संदर्भ

1. श्रीमद्भागवत 10 / 52 / 37
2. श्रीमद्भागवत 10 / 30 / 4
3. श्रीमद्भागवत 10 / 33 / 12
4. आनन्द कन्द चम्पू 7 / 106
5. आनन्द कन्द चम्पू 5 / 258
6. नाट्य शास्त्र–भरतमुनि
7. नलचम्पू–श्री विक्रम भट्ट
8. परिजातहरण चम्पू–शेष कृष्ण
9. रसगंगाधर–तृतीय संस्करण
10. नाट्य शास्त्र–भरतमुनि द्वितीय संस्करण